अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **प्रथम वर्ष-प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

पच्चीस बोल-20

प्र. 1 कोई तीन बोल लिखें- 12

(क) चौदहवां बोल -संवर के भेद?

(ख) चौबीसवां (अंक 21 का भांगा)

(ग) बीसवां बोल

(घ) ग्यारहवां बोल तथा तेईसवां बोल

(ङ) सोलहवां बोल

प्र. 2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक-दो शब्द अथवा एक वाक्य में दें- 5

(क) जन्म से वैक्रिय शरीर किसे प्राप्त होता है?

(ख) नरक में कौन-कौन से ध्यान होते हैं?

(ग) चार गति के जीवों में किस गति के जीव श्रावक हो सकते हैं?

(घ) कौन से देवलोक से सिर्फ एक शुक्ल लेश्या हेाती है?

(ङ) श्रावक के गुणस्थान का नाम लिखें।

(च) तेरहवें आश्रव का नाम लिखें।

(छ) बारहवां पाप कौन सा है?

प्र. 3 जीव के ज्ञान दर्शन रूप चेतना के व्यापार को उपयोग कहते हैं, वह कौन सा बोल है? पूरा लिखें। 3

पच्चीस बोल की चर्चा-45

प्र. 4 किसमें व कौन-कौन से पाते हैं? (कोई 12) 24

(क) बारह योग

(ख) तीन आत्मा

(ग) दो पर्याप्ति

(घ) सात कर्म

(ङ) चार काय

(च) दो जाति

(छ) दो दृष्टि

(ज) चार द्रव्य

(झ) दो ध्यान

(ञ) नौ प्राण

(ट) तीन दण्डक

(ठ) आठ योग

(ड) आठ आत्मा

(ढ) तीन गति

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने व कौन से योग पाते हैं?

(ख) छह आत्मा किसमें, कौन सी व क्यों?

(ग) एक ध्यान किसमें, कौन सा व क्यों पाया जाता है?

(घ) एक प्राण किसमें, कौन सा व क्यों पाया जाता है?

प्र. 6 कोई तीन बोल की चर्चा लिखें– 15

(क) ग्यारहवां (ख) नौवां

(ग) जीव के भेद (घ) सतरहवां एवं पच्चीसवां

(ङ) सोलहवां 6 से 19 दण्डक तक

पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–35

प्र. 7 कोई पाँच चतुर्भंगी लिखें– 25

(क) सतरहवां बोल (ख) पन्द्रहवां बोल

(ग) बारहवां बाल (घ) निर्जरा के 12 भेद

(ङ) संवर के बीस भेद (च) पांचवां बोल

(छ) जीव तत्त्व के 14 भेद

प्र. 8 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) द्रव्य जीव या अजीव?

(ख) ध्यान किस कर्म का उदय?

(ग) किस पर्याप्ति के जीव कम, किस पर्याप्ति के जीव अधिक?

(घ) किस गुणस्थान के जीव कम, किस गुणस्थान के जीव अधिक?

(ङ) इन्द्रिय किस कर्म का उदय?

(च) तुम्हारे में उपयोग कितने?

(छ) तुम्हारे में मोक्ष तत्त्व के भेद कितने?

(ज) किस शरीर के जीव कम, किस शरीर के जीव अधिक?

(झ) तुम्हारे में चारित्र कौन सा?

(ञ) किस प्राण के जीव कम, किस प्राण के जीव अधिक?

(ट) जाति जीव या अजीव?

(ठ) काय किस कर्म का उदय?

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **द्वितीय वर्ष–प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

जैन तत्त्व प्रवेश–'प्रथम खण्ड'–30

प्र. 1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें– 15

(क) षडद्रव्य द्वार–काल से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव गुण द्वार-आश्रव, निर्जरा, पुद्गल, मोक्ष, काल की व्याख्या करें।

(ग) दृष्टांत द्वार-बंध के बाद वाले प्रश्न उत्तर सहित लिखें।

(घ) दृष्टांत द्वार–पुण्य-पाप की व्याख्या दृष्टांत द्वार के आधार पर करें।

प्र. 2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) आत्म द्वार

(ख) भेद द्वार

(ग) सावद्य-निरवद्य द्वार

(घ) वेदनीय व गोत्र कर्म को उदाहरण के द्वारा समझाएं

(ङ) निर्जरा के भेद अर्थ सहित

(च) विस्तार द्वार-प्रारंभ से लिखते हुए दो वर्गों में बांटो तो–विभाग होते हैं तक लिखें।

(छ) भाव द्वार-औदायिक भाव का वर्णन करें।

प्रतिक्रमण–20

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) शक्र स्तुति

(ख) जीव योनि

(ग) वंदना सूत्र

(घ) भोगोपभोग परिमाण व्रत के अतिचार।

प्र. 4 किन्हीं पांच प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दें– 5

(क) पद विपर्यय का अर्थ लिखें।

(ख) 'अर्थ के व्यवहार' शब्द का अर्थ बताऐं।

(ग) कायोत्सर्ग क्यों करते हैं?

(घ) कर्मादान कितने हैं? ये किस व्रत के अंतर्गत आते हैं?

(ङ) सम्यक्त्व के लक्षण कितने हैं, नाम लिखें।

(च) छह आवश्यकताओं में तीसरे व चौथे आवश्यक का नाम बताऐं।

कर्म प्रकृति–25

प्र. 5 कोई तीन प्रश्न करें– 9

(क) नाम कर्म की प्रत्येक प्रकृतियों में से प्रथम चार को अर्थ सहित लिखें।

(ख) दर्शन मोह कर्म की प्रकृतियों की स्थिति लिखें।

(ग) वेदनीय कर्म लिखें।

(घ) आयुष्य कर्म की स्थिति लिखें।

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) शुभ नाम कर्म भोगने के हेतु लिखें।

(ख) प्रथम पांच स्थावर दशक की व्याख्या करें।

(ग) नौ कषाय को परिभाषित करते हुए उनकी प्रकृतियों का वर्णन करें।

(घ) घाति व अघाति कर्म किसे कहते हैं? इन कर्मों में कितने कर्म घाति व कितने अघाति हैं? नाम लिखें।

(ङ) चारित्र मोह कर्म के लक्षण एवं कार्य का यंत्र-अप्रत्याख्यानी मान, संज्वलन माया, प्रत्याख्यानी लोभ, अनंतानुबंधी माया, अप्रत्याख्यानी क्रोध किसके समान है?

(च) दर्शनावरणीय कर्म भोगने के हेतु लिखें।

गीतिका–कर्मों की सज्झाय–10

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) छप्पन.....पाणी रे।

(ख) सती.....कमाई रे।

(ग) बीस.....हार्‌यो रे।

(घ) साठ.....ऐसा रे।

प्र. 8 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) राजा हरिश्चन्द्र की रानी.....थी। उन्हें अपनी..... ..... बेचनी पड़ी।

(ख) आठवां चक्रवर्त्ती कौन था और जब उसे समुद्र में फेंका गया, तब कितने देव खड़े देखते रहे।

(ग) आभा नगरी का राजा कौन था? विमाता ने उसे क्या बना दिया?

पूर्व कंठस्थ-ज्ञान–15

प्र. 9 चार प्रश्नों के उत्तर दें (प्रत्येक खण्ड से एक प्रश्न का उत्तर दें)– 12

(क) पच्चीस बोल–नौवां बोल ***अथवा*** बाईसवां बोल।

(ख) चतुर्भंगी–पन्द्रहवां बोल ***अथवा*** आश्रव के 20 भेद।

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–जीव के 8 भेद से लेकर 13 तक ***अथवा*** बीसवां बोल।

(घ) तत्त्व चर्चा–अधर्म पर चर्चा ***अथवा*** सिद्ध भगवान की पृच्छा व हाथी-घोड़ा पक्षी आदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा।

प्र. 10 कोई एक पद्य अर्थ सहित लिखें– 3

(क) सावद करणी.....नांई रे।

(ख) नव तत्व.....नीं बात।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **तृतीय वर्ष–प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

बावन बोल–25

प्र. 1 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) तेईस पदवी कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ख) आठ कर्मों का उदय व क्षय निष्पन्न किस-किस गुणस्थान तक?

(ग) आठ कर्मों का उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र. 2 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) आठ कर्मों का बंध, उदय, सत्ता किस-किस गुणस्थान तक?

(ख) चौदह गुणस्थान कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ग) जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा?

(घ) चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) चौदह गुणस्थान छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ख) द्रव्य पुण्य, भाव पुण्य कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ग) धर्म-अधर्म कितने भाव? कितनी आत्मा?

(घ) आठ आत्मा में उदय भाव कितनी? यावत् पारिणामिक भाव कितनी?

इक्कीस द्वार–25

प्र. 4 कोई चार बोल पूरे लिखें– 20

(क) औपशमिक सम्यक्त्वी (ख) अचरम

(ग) असंज्ञी (घ) अज्ञानी

(ङ) वेदक सम्यक्त्वी (च) अभाषक

प्र. 5 कोई पांच प्रश्नों के उत्तर दें (कितने व कौन से पाते हैं)– 5

(क) सम्यक मिथ्यादृष्टि–योग व दण्डक

(ख) भाषक–योग, गुणस्थान।

(ग) अभवी–उपयोग, भाव।

(घ) अपर्याप्त–आत्मा, उपयोग।

(ङ) संयतासंयति–दण्डक, उपयोग।

(च) विभंगज्ञानी–जीव का भेद, वीर्य।

(छ) सूक्ष्म संपराय संयति–योग, उपयोग।

जैन-तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–30

प्र. 6 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) निर्वेद किसे कहते हैं?

(ख) निक्षेप के प्रकारों का नाम लिखें।

(ग) कोड़ी, जोंक आदि में योग कितने पाते हैं? नाम लिखें।

(घ) परोक्ष किसे कहते हैं? उसके भेदों के नाम लिखें।

(ङ) विचिकित्सा का अर्थ लिखें।

(च) श्रावक प्रतिमा द्वार–आठवीं प्रतिमा लिखें।

(छ) पंचेन्द्रिय के जीव संज्ञी या असंज्ञी?

प्र. 7 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) आगम द्वार लिखें।

(ख) दान–दया–अनुकम्पा द्वार प्रारंभ से लिखते हुए 'ज्यूं सीझै आतम काम' तक लिखें।

(ग) पुण्य-पाप द्वार लिखें।

प्र. 8 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) श्रावक गुण द्वार

(ख) विश्राम द्वार

(ग) शील आदरियो.....मांय।

(घ) व्रताव्रत द्वार-निर्ग्रंथ के अंतिम तीन प्रकार लिखते हुए 'साध नै श्रावक रतनांरी माला' के पहले का वर्णन करें। दोहा नहीं लिखें।

(ङ) सप्तभंगी लिखें व नय को परिभाषित करें।

(च) श्रावक प्रतिमा द्वार–चौथी, पांचवीं व छठी प्रतिमा की व्याख्या करें।

(छ) धर्म अधर्म द्वार–प्रारंभ से लिखते हुए धर्म के दो प्रकार तक लिखें।

पूर्ण कंठस्थ ज्ञान–20

प्र. 9 किन्हीं आठ प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखें– 8

प्रत्येक खंड में से दो प्रश्न हल करें।

पच्चीस बोल–

(क) आस्रव का 12वां भेद

(ख) इक्कीसवां विषय

(ग) दसवां योग

चतुर्भंगी–

(क) लेश्या जीव या अजीव?

(ख) ध्यान किस कर्म का उदय?

(ग) किस भेद के जीव कम किस भेद के जीव अधिक?

पच्चीस बोल की चर्चा–

(क) जीव तत्त्व के छह भेद किसमें व कौन से?

(ख) अठारह दण्डक किसमें व कौन से?

(ग) बारह योग किसमें व कौन से?

तत्त्व चर्चा–

(क) पाप धर्म या अधर्म?

(ख) पुण्य हेय या उपादेय?

(ग) दया छह में कौन? नौ में कौन?

प्र. 10 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) **कर्म प्रकृति**–प्रत्येक प्रकृति–अंतिम पांच प्रकृतियों की व्याख्या करें। ***अथवा*** अपवर्तना व उदीरणा की व्याख्या करें।

(ख) **जैन तत्त्व प्रवेश**–दृष्टांत द्वार–आश्रव की व्याख्या करें। ***अथवा*** द्रव्य-गुण पर्याय द्वार–प्रारम्भ से लेकर सामान्य गुण के प्रकार लिखते हुए उनकी व्याख्या करें।

(ग) **प्रतिक्रमण**–वंदना सूत्र–प्रारंभ से लिखते हुए देवसिंय वइक्कमं से पहले तक का लिखें। ***अथवा*** ईर्यापथिक सूत्र-प्रारंभ से लिखते हुए अभिहया से पहले तक का लिखें।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **चतुर्थ वर्ष–प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) च्यवन द्वार

(ख) ज्योतिष देवों की स्थिति

(ग) समुद्घात द्वार

(घ) गति आगति द्वार–पृथ्वीकाय अपकाय से प्रारंभ करते हुए तीस अकर्म भूमि तक लिखें।

(ङ) उपयोग को परिभाषित करते हुए सात नारकी से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(च) अवगाहना द्वार-द्वीन्द्रिय की अवगाहना से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखे।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) कषाय द्वार (ख) ज्ञान द्वार

(ग) अज्ञान द्वार

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) मनःपर्यव ज्ञान के विषय क्षेत्रतः व कालतः का वर्णन करें।

(ख) संज्ञी श्रुत व असंज्ञी श्रुत के तीन प्रकारों को व्याख्या सहित लिखें।

(ग) अश्रुत निश्रित मतिज्ञान के प्रकारों से प्रारंभ करते हुए प्रतिबोधक दृष्टांत तक लिखें।

(घ) वर्धमान व हीयमान अवधिज्ञान का वर्णन करें।

(ङ) श्रुत के समुच्चय रूप से कितने प्रकार हैं, व्याख्या सहित लिखें तथा मति ज्ञान व श्रुत ज्ञान में भेद लिखें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) लब्धि अक्षर किसे कहते हैं?

(ख) क्षायोपशमिक अवधिज्ञान किनके होता है?

(ग) गमिक श्रुत किसे कहते हैं? किस आगम में गमिक शैली का प्रयोग हुआ है?

(घ) प्रत्येक बुद्ध नियमतः जघन्य व उत्कृष्ट कितने श्रुत के ज्ञाता होते हैं?

(ङ) द्रव्य की दृष्टि से सब रूपी द्रव्यों को कौन सा अवधिज्ञानी जानता व देखता है?

(च) सागरोपम के आयुष्य वाले देव तिर्यक लोक में अवधिज्ञान के द्वारा कहां तक देखते हैं?

(छ) मनःपर्यव ज्ञान ऋद्धि प्राप्त के होता है, इसका क्या तात्पर्य है?

(ज) अपर्यवसित श्रुत–अन्त रहित। इससे आप क्या समझते हैं?

गीतिका–(गुणस्थान-दिग्दर्शन)–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षित उत्तर लिखें– 2

(क) वेदनीय कर्म के दो भेद कौन से हैं? उनकी स्थिति कितनी बताई गई है?

(ख) आठों कर्मों को जीव किन-किन गुणस्थानों में क्षीण करता है?

(ग) देश मोह व सर्व मोह का उपशम निष्पन्न भाव किन गुणस्थानों में होता है?

प्र. 6 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) आयु कर्म.....मिलावै रे।

(ख) मोह तणी.....मझारो रे।

(ग) ज्ञानावरणीय.....बंधायो रे।

(घ) उपसम.....दबावै रे।

पूर्ण कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य रूप से दें– 30

(क) **पच्चीस बोल**–अंक 21 का भांगा अथवा देवों के दण्डक। 3

(ख) **चतुर्भंगी**–उन्नीसवां बोल ***अथवा*** निर्जरा के 12 भेद। 3

(ग) **पच्चीस बोल की चर्चा**–बीसवां बोल ***अथवा*** जीव के भेद 8 से 13 तक। 3

(घ) **तत्त्व चर्चा**–विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्त्व ***अथवा*** पुण्य, धर्म आदि एक या दो। 3

(ङ) **जैन तत्त्व प्रवेश**–(प्रथम खण्ड) दृष्टांत द्वार–आश्रव की व्याख्या। ***अथवा*** सामान्य गुण के प्रकारों की व्याख्या। 3

(च) **कर्म प्रकृति**–दर्शन मोह कर्म की प्रकृतियों का कार्य व स्थिति ***अथवा*** मोहनीय कर्म की गुणस्थानों की अवस्थिति। 4

(छ) **बावन बोल**–उदय के तैतीस बोलों में कौन-कौन आत्मा? ***अथवा*** जीव पारिणामिक के दस भेद छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 3

(ज) **इक्कीस द्वार**–सम्यक् मिथ्या दृष्टि ***अथवा*** सूक्ष्म। 4

(झ) **जैन तत्त्व प्रवेश**–(द्वितीय व तृतीय खण्ड)–श्रावक गुण द्वार ***अथवा*** 4

शील आदरियो.....मांय।

चोर हिंसक.....रेश। पद्यों को पूरा करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **पांचवां वर्ष-प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

संजया-25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें- 10

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र-अंतर द्वार

(ख) यथाख्यात-प्रवज्या द्वार

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र-आकर्ष द्वार

(घ) सूक्ष्म संपराय-काल द्वार

(ङ) सामायिक चारित्र-गति-स्थिति-पदवी

(च) छेदोपस्थापनीय चारित्र-स्थिति द्वार

(छ) सामायिक चारित्र-परिणाम द्वार

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें- 6

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले का संहरण क्यों नहीं होता है?

(ख) मध्यवर्ती बाईस तीर्थंकरों के शासन में अनिवार्य कल्प कौन से हैं? नाम लिखें।

(ग) यथाख्यात चारित्र किस अपेक्षा से शाश्वत है?

(घ) सामायिक चारित्र वाले नो संज्ञोपयुक्त किस अपेक्षा से है?

(ङ) परिहार विशुद्धि चारित्र वालों के जघन्य उत्कृष्ट कितने भव बताए गए हैं?

(च) यथाख्यात चारित्र में परम शुक्ल लेश्या किस अपेक्षा से है?

(छ) यथाख्यात चारित्र वालों का ज्ञान द्वार लिखें।

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें- 9

(क) सामायिक चारित्र का आकर्ष द्वार लिखते हुए बताऐं कि एक भव व अनेक भव की अपेक्षा से कितनी बार व किस अपेक्षा से चारित्र का ग्रहण हो सकता है?

(ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अंतर द्वार लिखते हुए बताऐं कि अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य एवं उत्कृष्ट अंतर किस अपेक्षा से है?

(ग) यथाख्यात चारित्र का परिणाम द्वार लिखते हुए बताएं कि जघन्य व उत्कृष्ट परिणाम किस अपेक्षा से है?

(घ) सामायिक चारित्र-कर्म उदीरणा द्वार लिखते हुए बताएं कि कर्म उदीरणा क्या है व अलग-अलग कर्मों की उदीरणा के पीछे क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

नियंठा–25

प्र. 1 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) यथासूक्ष्म बकुश कौन सा दोष लगा सकता है?

(ख) अतीर्थी में कौन से जीव आते हैं?

(ग) बकुश निर्ग्रंथ से आप क्या समझते हैं?

(घ) एक व्यक्ति में ज्यादा से ज्यादा कितने शरीर हो सकते हैं?

(ङ) कौन से निर्ग्रंथों का उनकी वर्तमान स्थिति में संहरण नहीं हो सकता है?

(च) लब्धि की स्थिति में कौन सा निर्ग्रंथ काल नहीं कर सकता है?

(छ) दो कर्मों की उदीरणा किन गुणस्थानों में होती है?

(ज) ज्ञान द्वार–पुलाक का ज्ञान व अध्ययन कितना होता है?

(झ) प्रतिसेवना में कितने चारित्र हो सकते हैं?

प्र. 5 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) बकुश–काल द्वार

(ख) पुलाक–गति–स्थिति–पदवी

(ग) निर्ग्रंथ–अंतर द्वार

(घ) पुलाक–आकर्ष द्वार

(ङ) कषाय कुशील–प्रवज्या द्वार

(च) बकुश–सन्निकर्ष

(छ) बकुश–परिणाम-स्थिति

(ज) कषाय कुशील–कर्म उदीरणा।

गीतिका–नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2

(क) किस गुणस्थान वाला कौन सा मुनि डंडों से सेना को भगा देता है व वह किस चीज का प्रतिसेवन करता है।

(ख) भगवान ने ज्ञाता सूत्र के दसवें अध्ययन में किसकी तरह अपने साधु-साध्वियों को बताया है?

(ग) मासिक-चौमासिक प्रायश्चित्त के पाठ किस सूत्र में मिलते हैं तथा जीव किस प्रकार आराधक व विराधक बन जाता है?

प्र. 7 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) अथवा.....नेण अवलोय।

(ख) सांभल.....काली जोय।

(ग) हय रूप.....जोय।

(घ) खेत धान.....उफणोय।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) **पच्चीस बोल**–8 से 15 संवर के भेद ***अथवा*** 8 से 15 आश्रव के भेद। 2

(ख) **चतुर्भंगी**–सतरहवां बोल ***अथवा*** संवर के भेद। 3

(ग) **पच्चीस बोल की चर्चा**–जीव के सात भेद से बारह तक ***अथवा*** आठ योग से लेकर तेरह योग तक। 3

(घ) **तत्त्व चर्चा**–धर्म पर चर्चा अथवा छह द्रव्यों में सावद्य-निरवद्य। 3

(ङ) **कर्म प्रकृति**–प्रत्येक प्रकृति किसे कहते हैं उसकी अंतिम तीन प्रकृतियों का वर्णन करें ***अथवा*** प्रकृति बंध की व्याख्या करें। 3

(च) **जैन तत्त्व प्रवेश**–(प्रथम खण्ड) भेद द्वार ***अथवा*** दृष्टांत द्वार–जीव अजीव की व्याख्या। 3

(छ) **प्रतिक्रमण**–प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा ***अथवा*** छट्ठा प्रत्याख्यान आवश्यक। 3

(ज) **जैन तत्त्व प्रवेश**–(द्वितीय व तृतीय खण्ड) श्रावक गुण द्वार ***अथवा*** व्रताव्रत द्वार–अनगार धर्म पालने .....से प्रारंभ कर साध नै श्रावक दोहे को पूरा करें। 4

(झ) **इक्कीस द्वार**–विभंग ज्ञानी ***अथवा*** असंज्ञी का पूरा बोल। 4

(ञ) **बावन बोल**–उदय के तैतीस बोल में कौन-कौन आत्मा? ***अथवा*** संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? 3

(ट) **लघु दण्डक**–संहनन द्वार ***अथवा*** दर्शन द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक लिखें। 3

(ठ) **पांच ज्ञान**–हेतु उपदेश ***अथवा*** मल्लक दृष्टांत। 3

(ड) **लघु दण्डक**–जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा? ***अथवा*** चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी? 3

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-12-2019**

समय : 3 घंटा **षष्ठम वर्ष–प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

गतागत–40

प्र. 1 किसी आठ प्रश्नों के उत्तर दें–(कितनी व कहाँ-कहाँ से) गति-आगति लिखें– 24

(क) पांचवी नरक
(ख) संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(ग) वासुदेव प्रतिवासुदेव
(घ) हरिवास, रम्यकवास के यौगलिक
(ङ) अवधिज्ञान
(च) नपुंसक वेद
(छ) औदारिक शरीर
(ज) स्त्री वेद
(झ) मतिज्ञान श्रुतज्ञान
(ञ) विभंग अज्ञान

प्र. 2 किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) पद्म लेश्या वाले पद्म लेश्या में जाए तो आगति व गति
(ख) देवकुरू, उत्तरकुरू के यौगलिक तथा हेमवत, हैरण्यवत के यौगलिक में गति आगति
(ग) सम्यक् दृष्टि व सम्यक् मिथ्यादृष्टि में आगति व गति
(घ) केवलज्ञानी व चक्रवर्त्ती में आगति व गति
(ङ) उर्ध्व लोक, अधोलोक व मध्य लोक में जीव के भेद कितने-कितने?
(च) घातकी खंड में तथा देवता के भेद कितने व कौन से भेद पाते हैं?

काय स्थिति–40

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें–(जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अंतर) 30

(क) समुच्चय निगोद
(ख) स्त्री वेदी
(ग) मिथ्यात्वी
(घ) उपशम वेदी
(ङ) चक्षु दर्शनी
(च) छद्मस्थ आहारक
(छ) बादर भाव पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?
(ज) आहारक शरीर को पुद्गल परावर्तन में क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है?
(झ) अवधिदर्शनी की जघन्य व उत्कृष्ट कायस्थिति लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?
(ञ) सवेदी की जघन्य व उत्कृष्ट कायस्थिति लिखते हुए बताऐं कि सादि सान्त की स्थिति किस प्रकार घटित होती है?

(ट) संसारी अभाषक की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अंतर लिखते हुए बताऐं कि इसकी जघन्य स्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

प्र. 4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें– 10

(क) सूक्ष्म निगोद व बादर निगोद का मिलाने से क्या स्थिति घटित होती है?

(ख) पुद्गल परावर्तन का कालमान कितना है?

(ग) संयता संयति की जघन्य कायस्थिति कितनी व किस अपेक्षा से है?

(घ) प्रथम और दूसरे देवलोक की अपरिगृहीत देवियों की स्थिति कितनी है?

(ङ) द्वीन्द्रिय की उत्कृष्ट भवस्थिति कितनी है?

(च) भाषक की जघन्य कायस्थिति कितनी व किस अपेक्षा से है?

(छ) शुक्ललेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी व किस अपेक्षा से है?

(ज) बादर क्षेत्र पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?

(झ) पद्मलेश्या की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी व किस अपेक्षा से है?

(ञ) छद्मस्थ का उपयोग कितने समय का होता है?

(ट) कापोतलेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है? इसके पीछे क्या कारण है, लिखें।

(ठ) संसार परीत किसे कहते हैं?

गीतिका (पांच वर्षों की)–20

प्र. 5 किन्हीं चार पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 16

(क) इम सांमल.....भाष ए।

(ख) ए दान.....मिथ्यात ए।

(ग) जीव अजीव.....डिगाई रे।

(घ) सावद.....नांई रे।

(ङ) हाड मिजां.....अवतार।

(च) पिण बाकी.....में ए।

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक दो पंक्तियों में लिखें– 4

(क) चार अघाति कर्मों को जीव किस गुणस्थान में क्षीण करता है?

(ख) देश मोह तथा सर्व मोह का उपशम निष्पन्न भाव किन गुणस्थानों में होता है?

(ग) सब खानों में.....नहीं होते हैं, सब बगीचों में.....नहीं होता है।

(घ) .....ने ..... के घर बारह वर्ष तक सिर पर पानी ढोया।

(ङ) कई अज्ञानी कहते हैं कि श्रावक का.....क्यों नहीं करें। वह तो..... का पात्र है।

(च) आठों कर्मों की सत्ता किन-किन गुणस्थानों में है?